चतुर्थ मासिक पुण्य तिथि

'आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने मुझे काम करने के लिए खुला आकाश दिया'

- आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर y सितम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आचार्य महाप्रज्ञ की चतुर्थ मासिक पुण्य तिथि पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस मौके पर आचार्य महाश्रमण ने उनके सान्निध्य में बिताये पलों को याद करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने मुझे काम करने के लिए खुला आकाश प्रदान किया। जब भी मौका मिला उन्होंने संघीय कार्यों को मेरे द्वारा संपादित करवाय। मानो वे अंतिम समय में हर कार्य में दक्ष करने का प्रशिक्षण दे रहे थे।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ विनम्र थे, मृदु थे। वे हमेशा प्रसन्न रहते थे। जहां प्रसन्नता होती है वहीं शांति रहती है और शांति है वहीं प्रसन्नता है, दोनों का जोड़ा है। हर स्थिति में शांत रहने वाला ही सुखी हो सकता है। उन्होंने कहा कि मुझे गुरु से साक्षात् संवाद करने का मौका मिला। आचार्यश्री महाप्रज्ञ से अनेक रूपों में संवाद किया। वास्तव में वे एक महान संत थे।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि जो खाद्य संयम और वाणी का संयम करना जानता है वह मानसिक प्रसन्नता को प्राप्त करता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने समता की साधना की और हमेशा प्रसन्नता का जीवन जीया। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी के कषाय उपशांत थे। इसीलिए उन्होंने हर अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों को सम भाव से सहन किया। कभी भी क्रोध मुखर नहीं हुआ। उपशांत कषाय की वहज से ही लोगों में उनके प्रति आकर्षण दिनों-दिन बढता गया। इस मौके पर साध्वी मनीषाश्री आदि साध्वियों ने समूह गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मुकुलयशा ने मंगलाचरण दिया। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

पूर्व जन्म अनुभूति शिवर संपन्न

आचायंश्री महाश्रमण एवं मुनि किशनलाल के सान्निध्य में चलने वाले 6 दिवसीय शिविर का आज संपन्न हुआ इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने शिविरार्थियों को साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास करते रहने की प्रेरणा प्रदान की। प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा कि इस शिविर में शिविरार्थियों आत्मा को पहचानने का प्रयत्न किया है, यह शिविर इसलिए है कि व्यक्ति को आत्मा की अनुभूति होती है। व्यक्ति यह जान लेता है कि आत्मा है और वह अमर है मनुष्य को इस शिविर से यह सीख लेनी चाहिए कि ऐसा कोई भी कार्य न करूं जिससे गति खराब हो, हमेशा अच्छे कर्म करते रहना चाहिए जिससे उसकी गति अच्छी हो सकती है, अगला जन्म भी अच्छा मिल सकता है। इस अवसर जयचन्द भण्डारी, तेजपालसिंह चौधरी, रतन चौरड़िया, जयपुर से समगत डॉ. शिव तैजस ने अपने अनुभव प्रस्तुत किये, शिविर में अहमदाबाद से समागत शंकरलाल भंसाली ने भी अपना योगदान दिया। शिविर प्रशिक्षक गिरजाशंकर दुबे ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)